प्रातःक्लास 9/6/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। बच्चे समझते हैं हम स्टूडेन्ट हैं। बाप के स्टूडेन्ट्स। क्या पढ़ रहे हो। हम मनुष्य से देवता बनने लिए ट्यूशन पढ़ रहे हैं। कौन ट्यूशन ले रहे हैं। हम सभी आत्माएं परमपिता परमात्मा से ट्यूशन ले रहे हैं। अभी समझ गये हैं कि हम जन्म व जन्म व अपन को देह समझते थे न कि आत्मा। लौकिक बाप फिर ट्यूशन के लिए और जगह भेज देते हैं। सद्गति के लिए और जगह भेज देते थे। बाप बूढ़ा हुआ तो फिर उनको वानप्रस्थ में जाने दिल होती है; परंतु वानप्रस्थ को कोई जानते नहीं हैं। न गुरुलोग ही जानते हैं। वाणी से परे हम कैसे जा सकते हैं बुद्धि में नहीं बैठता है कि अभी तो हम पतित हैं। जहां से हम आत्माएं आये हैं वहां तो हम पावन थे। यहां आकर पार्ट बजाते–2 हम पतित बन गये हैं। अभी फिर पावन कौन बनावे। पुकारते भी हैं हे पतित–पावन..... गुरु को तो कोई पतित–पावन नहीं कह सकते। गुरु करते हैं फिर भी एक में पूरा निश्चय नहीं बैठता; इसलिए जांच करते हैं ऐसा कोई गुरु मिले जो हमको अपने घर अथवा वानप्रस्थ अवस्था में पहुँचावे। इसके लिए बहुत युक्तियां रचते हैं। जहां सुना कि फलाने की बहुत महिमा है, उनके बहुत फॉलोवर्स हैं, वहां भागते हैं। तुमको अनुभव भी सुनाते हैं कि बहुत ढूँढ़ा बहुत देखा। फिर भी सैम्पलिंग जो इस झाड़ का है उनको तुम्हारे ज्ञान का तीर लग जाता है। समझते हैं यह तो क्लीयर बात है। बरोबर तुम वानप्रस्थ अवस्था में जाते हो ना। कोई बड़ी बात भी नहीं हैं। टीचर के लिए स्कूल में पढ़ाना कोई बड़ी बात है क्या। भक्तों को क्या चाहिए यह भी किसको पता नहीं है। अभी तुम बच्चे इस ड्रामा के चक्र को जान गये हो। तुम समझते हो बरोबर बाप ने ही वर्सा दिया था। जो अभी दे रहे हैं। फिर इसी अवस्था में आवेंगे। अभी हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हैं। फिर चक्र लगाकर इस तमोप्रधान अवस्था में आवेंगे। कैसे आवेंगे सो तो तुम बच्चे समझते हो। पहली मुख्य बात है पावन बनने लिए बाप को याद करना। लौकिक बाप तो सभी को याद है। पारलौकिक बाप को कोई नहीं जानते हैं। अभी तुम समझते हो अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना सहज ते सहज भी है, कठिन ते कठिन भी है। आत्मा इतना छोटा सितारा है। वह है सम्पूर्ण पवित्र। और आत्माएं हैं सम्पूर्ण अपवित्र। सम्पूर्ण पवित्र का संग तारे, सो तो एक का ही संग मिल सकता है। संग चाहिए ज़रूर। फिर कुसंग भी मिलता है 5 विकार रूपी रावण का। उनको कहा ही जाता है रावण सम्प्रदाय। तुम अभी बन रहे हो राम–सम्प्रदाय। तुम राम–सम्प्रदाय बन जावेंगे तो फिर यह रावण सम्प्रदाय न रहेंगे। यह बुद्धि में ज्ञान है। राम सम्प्रदाय और रावण सम्प्रदाय। राम कहेंगे भगवान को। भगवान ही आकर राम–राज्य स्थापन करते हैं अर्थात् सूर्यवंशी राज्य स्थापन करते हैं। राम–राज्य भी नहीं कहें; परन्तु समझाने में सहज होता है राम–राज्य और रावण–राज्य। वास्तव में है सूर्यवंशी–राज्य। अभी बच्चों को कल प्रभात फेरी भी निकालनी है। बाबा आज स्लोगन देख लेंगे। स्लोगन ऐसी हो जो मनुष्यों को चुभ जाये। पर्चे तो तुम्हारे पास ढेर हैं। स्वर्गवासी हो या नर्कवासी। ग़रीबों को फ्री देना होता है। दान भी ग़रीबों को दिया जाता है ना। तुम्हारा एक छोटा पुस्तक भी है हीरे जैसा जीवन कैसे बने। अभी हीरे जैसा जीवन किसको कहा जाता है, मनुष्य क्या जाने। सिवाय तुम्हारे। लिखना चाहिए हीरे जैसा देवताई जीवन कैसे बने। देवता अक्षर एड होना चाहिए। तुम फील करते हो हम हीरे जैसा जीवन यहां बना रहे हैं। सिवाय बाप के और कोई बना न सके। किताब है बहुत अच्छा। इसमें सिर्फ़ एक अक्षर एड कर दो नहीं तो मनुष्य समझें(गे)। कहेंगे क्या हम हीरो बन जावेंगे। मनुष्य हीरो(रे) वह समझते हैं जो ज़ेवर में पहना जाता है। आसुरी को(ड़ी) जैसे जीवन से हीरे देवताओं जैसे जीवन सेकण्ड में प्राप्त कर सकते हैं। बिगर कोड़ी खर्चा। बच्चा बाप के पास जन्म लेता है और वर्से का हकदार बनता है। बच्चे को खर्चा लगता है क्या। गोद में आया और वर्से का हकदार बना। खर्चा तो बाप करते हैं, न कि बच्चा। अभी तुमने क्या खर्चा किया। बाप का बनने में कोई खर्चा लगता है क्या? नहीं। जैसे लौकिक बाप से वर्सा लेने में खर्चा नहीं लगता है वैसे पारलौकिक बाप भी वर्सा लेने में खर्चा नहीं लगता है। यह तो बाप बैठ पढ़ाते हैं। पढ़ाकर तुमको यह (देवता) बनाते हैं।

तुम कोई छोटे बच्चे तो नहीं हो। बड़े हो। बाप का बनने से बाप राय देते हैं। तुमको अपनी राजधानी स्थापन करनी है। इसमें पवित्र ज़रूर बनना है। खर्चा तो कुछ भी नहीं लगता। गंगा पर जाते हैं स्नान करने, तीर्थों पर जाते हैं खर्चा तो करेंगे ना। तुमको बाप का निश्चय हुआ खर्चा लगा क्या? तुम्हारे पास सेन्टर्स पर आते हैं। तुम उनको कहते हो अभी बेहद के बाप का वर्सा लो। बाप को याद करो। बाबा है ना। बाप खुद कहते हैं मेरा वर्सा तुमको चाहिए ना। तुम पतित हो। वर्सा ल(ले)ने चाहते हो, पावन दुनियां अथवा विशव का मालिक बनने। यह भी जानते हो बाप वैकुण्ठ स्थापन करते हैं। समझदार बच्चे अच्छी रीत समझते हैं। बाप तो सिर्फ़ कहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। और कोई तकलीफ नहीं। कितना सहज है। उस पढ़ाई में खर्चा कितना होता है। यहां खर्चा तो कुछ भी नहीं। आत्मा कहती है हम अविनाशी हैं, यह शरीर विनाश हो जावेगा, बाल–बच्चे आदि सभी विनाश हो जावेंगे। अच्छा फिर इतने पैसे इकट्ठे किये हैं वह क्या करेंगे। ख़्याल तो होगा ना। कोई साहूकार भी होंगे उनका समझो कोई है नहीं, ज्ञान मिलता है तो समझते हैं इस हालत में पैसे क्या करेंगे। पढ़ाई तो है सोंस ऑफ इनकम। बाप ने बताया था एक इब्राहिमलिंकन था, बहुत ग़रीब था। रात को जागकर पढ़ता था। पढ़–2 कर इतना होशियार हो गया जो प्राइम मिनिस्टर बन गया। खर्चा लगा क्या। कुछ भी नहीं। बहुत ग़रीब जो होते हैं उनसे गवर्मेन्ट पैसा नहीं लेती है पढ़ने की(के)। (ऐसे) बहुत पढ़ते हैं उनसे फी(स) लेते नहीं। तो वह भी बिगर फी(स) पढ़कर प्राइम मिनिस्टर बन गया। कितना बड़ा पद पा लिया। खर्चा कुछ भी नहीं। यह गवर्मेन्ट भी खर्चा कुछ नहीं लेती है। समझते हैं दुनियां में सभी ग़रीब ही हैं। भल कितना भी साहूकार, लखपति, करोड़पति है वह भी कहेंगे ग़रीब हैं। हम उनको साहूकार बनाते हैं। भल धन कितना हो, तुम जानते हो यह तो बाकी थोड़े दिन के लिए है। यह भी मिट्टी में मिल जावेगा। तो ग़रीब ठहरा ना। सारा मदार है पढ़ाई पर। बाप बच्चों से पढ़ाई का क्या लेंगे, बाप तो दाता मालिक है। बच्चे जानते हैं हम भविष्य में यह बनेंगे। तुम कहेंगे इन्हों का राज्य ही नहीं है तो फिर बनेंगे कैसे। अरे मैं आया हूँ यह स्थापन करने लिए। बैज में भी यही समझानी है। नये–2 स्टूडेन्ट्स निकलते रहते हैं। शिवबाबा कहते हैं हमारे में जो आत्मा है उनमें भी तो पार्ट नुँधा हुआ है। हम जो विकारी पतित बने हैं उसको बाप आकर पावन बनाते हैं। पार्ट बजाते हैं कोई नई बात थोड़े ही है। यह तो जानते हो 5000 वर्ष पहले भी बाप ने विश्व की बादशाही दी थी। मुख्य बात बाप कहते हैं बच्चे मामेकम् याद करो। सम्मुख कहते हैं। रथ मिल गया तो बाप भी आ गया। रथ तो ज़रूर एक फिक्स होगा ना। बदली थोड़े ही हो सकता है। यह बन(ा) बनाया ड्रामा है। बदली हो नहीं सकता। कहते हैं यह जवाहरी कैसे प्रजापिता ब्रह्मा बनेगा। समझते हैं यह तो जवाहरी था। जवाहर एक होती है बनावटी, और दूसरी होती है सच्ची। इसमें भी सच्चा जवाहरात बाप देते हैं। तो फिर वह क्या काम आवेंगे। यह है ज्ञान रत्न। इनके सामने उन जवाहरात की कोई मूल्य नहीं। यह भी जवाहरी था; परन्तु जब यह रत्न मिली तो समझा यह जवाहरात कोई का काम का नहीं। यह अविनाशी ज्ञान रत्न एक–2 लाख रुपये का है। कितने तुमको रत्न मिलते हैं। यह ज्ञान ही सच्चे बन जाते हैं। तुम जानते हो बाप यह रत्न देते हैं, झोली भरने लिए। यह मुफ्त में मिलती है। खर्चा कुछ भी नहीं। वहां छतों, दिवालों में भी हीरे लगे रहते हैं। उनकी कीमत क्या होगी। वैल्थ बाद में होती है। वहां तो हीरे जवाहर भी तुम्हारे लिए कुछ नहीं है। यह तो बच्चों को निश्चय होना चाहिए। मूँझने की दरकार ही नहीं। बाबा ने समझाया है यह रूप भी, बसंत भी है बाबा छोटा सा रूप है। उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है। यह ज्ञान रत्न है जिससे तुम बहुत धनवान बनेंगे। बाकी कोई अमृत वा पानी आदि की बात ही नहीं। पढ़ाई में पानी की बात नहीं होती। पावन बनने में खर्चा की बात नहीं। तुम ज्ञान सागर के कंठे पर बैठे हो। यह उस पानी में स्नान करते हैं। तुम यहां यह ज्ञान रत्न लेते हो भेंट करो। वही ह(रि)द्वार में क्या–2 लगा पड़ा है। कितने बैठे हुये

होते हैं गंगा स्नान करने। इनमें तो शास्त्र आदि पढ़ने करने की कुछ भी दरकार नहीं। पावन बनना है ना। अच्छा जबकि गंगा स्नान पावन बनने लिए करते हैं फिर इतना यज्ञ–तप तीर्थ आदि क्यों करते हैं। गंगा स्नान से पावन बन गये फिर यहां तो रह न सके। फिर यह वेद–शास्त्र आदि क्यों पढ़ते। ऐसे तो नहीं कोई (वेद) पढ़ने से कोई पावन बन नहीं सकते हैं। कितना मूँझे हुये हैं। भक्ति मार्ग में मनुष्यों की बुद्धि चलती ही (नहीं) है। डम हो जाती है। तुमको अभी विवेक मिला है। समझते हो पतित–पावन तो एक ही बाप है। बाकी ..... गंगा स्नान, वेद–शास्त्र आदि पढ़ने से क्या फायदा। तुम पुकारते भी हो कि आकर पावन बनाओ। फिर इन शास्त्रों आदि में क्या रखा है। अपने योगबल से पावन बन रहे हो। जानते हो हम पावन बन पावन दुनियां में चले जावेंगे। अभी राइट यह वा वह? इन सभी बातों में बुद्धि चलनी चाहिए। ड्रामा में यह भक्ति का पार्ट भी होने का ही है। बाप कहते हैं अभी तुमको पावन बन पावन दुनियां में चलना है। जो पावन बनेंगे वही पावन दुनियां में जावेंगे। वहां तो कोई पतित होगा ही नहीं। बाकी नदी तो है ही। तो फिर या पावन हो आते रहेंगे। अर्थ ही नहीं। बिल्कुल फालतू है। भक्ति में शौक कितना है। कितने वेद शास्त्र आदि पढ़ते हैं। और ही भक्ति के दुवण(दुब्बण) में जाकर फंस पड़ते हैं। भक्ति की किचड़ है ना। सबसे बड़ी किचड़ (है) विकार की। जिसमें गले तक सभी फंसे हुये हैं। जो यहां के सैम्पलिंग होंगे वह निकल आवेंगे। बाकी थोड़े ही समझेंगे। वह तो दुब्बण में ही फंसे रहेंगे। जब सुनेंगे तक(ब) पिछाड़ी में कहेंगे अहो प्रभु तेरी लीला। आप पुरानी दुनियां को नई कैसे बनाते हो। तुम्हारा यह ज्ञान अखबारों में बहुत–2 जावेगा। ख़ाय(स) यह चित्र (अखबार में रंगीन डाल दो और लिख दो शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा पढ़ाकर स्वर्ग़ का मालिक यह (ल.ना. बनाते हैं। कैसे? याद की यात्रा से। याद करते–2 तुम्हारी कट उतर जावेगी। पूछते हैं ना रास्ता बताओ। तो तुम खड़े–2 सभी को रास्ता बताओ। बाप कहते हैं मामेकं याद करो। अपन को आत्मा समझो। घड़ी–2 यह याद दिलाकर फिर देखो इनका चेहरा कुछ बदलता है। नयन पानी से भीगते हैं। तब समझो कुछ बुद्धि में बैठा है। पहले–2 समझानी ही है यह एक बात। पांच हज़ार वर्ष पहले भी बाप ने कहा है मामेकं याद करो। शिवबाबा आया था तब तो शिव जयन्ती मनाते हैं ना। भारत भी स्वर्ग़ बनाने लिए यही समझाया था मामेकं याद करो। तो तुम पावन बन जावेंगे। छोटी–2 बच्चियां भी ऐसे बैठ सुनावे बेहद का बाबा शिवबाबा (भी) समझाते हैं। बाबा अक्षर बहुत मीठा लगता है। बाबा और वर्सा। इतना निश्चय में बच्चों को रहना है। यह है ही मनुष्य से देवता बनने की संस्था। देवताएं होते ही हैं पावन। अब बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। मनमनाभव् अक्षर सुने हैं? न सुने हो तो बाप सुनाते हैं। बाप कहते हैं मैं ही पति(त)–पावन हूँ। मुझे याद करो तो तुम्हारी खाद निकल जावेगी। फिर सतोप्रधान बन जावेंगे। मेहनत ही यह है। (योगी) के लिए तो सभी कह देते बहुत अच्छा है; परंतु प्राचीन योगी की बात को कोई नहीं जानते। पाव(न) बनने की बात तुम सुनाते हो तो भी सुन(ते) नहीं। बाप कहते हैं (तुम) सभी तमोप्रधान पतित बन .....हाक अभी अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। असल तुम आत्माएं मेरे साथ थी ना। मुझे तुम बुलाते भी हो गॉडफादर आओ। अभी मैं आया हूँ तो मेरी मत पर चलो। यह है ही पतित से पावन होने की मत। मैं हूँ सर्व शक्तिवान एवर पावन। अभी तुम मेरे को याद करो। इनको ही प्राचीन योग कहा जाता है; क्योंकि तुम तमोप्रधान हो ना। धंधे आदि में भी भल रहो। बाल–बच्चे आदि भी भल सम्भालो। सिर्फ़ बुद्धि योग और सबसे हटाकर मेरे साथ लगाओ। यह है सबसे मुख्य बात। यह न समझा तो गोया कुछ भी नहीं स(मझा)। ज्ञान के लिए तो कहते हैं बहुत अच्छा। बड़ा अच्छा ज्ञान देते हो। पवित्रता भी अच्छी है; परन्तु हम हमेशा के लिए पवित्र कैसे बनें। वह बात समझते ही नहीं। देवताएं हमेशा पवित्र थे ना। वह कैसे बने। यह बात पहले–2 समझानी है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। याद से ही पाप मिट जावेंगे और तुम देवता बन जा(वेंगे)

नहीं तो सज़ा खावेंगे। ज्ञान जो सुनते हैं उनका विनाश नहीं होता है। प्रजा तो बन ही जावेगी। बाकी तो पुरुषार्थ करना है, हम आत्मा हैं। हमारा बाबा तो बहुत ही मीठा है। उनको हम क्यों नहीं याद करेंगे। बाबा हम तो आपे ही शरण में आये हैं, आपका ही बनें हैं, आपका ही वर्सा लेंगे। ऐसे सिर्फ़ शरण में आने से वरसा(वारिस) थोड़े ही बनेंगे। पावन बनना है योगबल की यात्रा से। अरे! बाप को याद करना कोई कठिन है, जिससे वर्सा मिलता है। जन्म से ही बाबा–2 कहते आये हैं। बेहद का बाबा तो एक ही है। उनको ..... करना है। और कोई तरफ दृष्टि न जाये। बात एक ही है हरेक को उनसे वर्सा लेना है। बाप कहते (हैं) तुम आत्माएं मेरे बच्चे हो ना। मेरे नहीं तो भला किसके हो? इतनी सभी आत्माओं का बाप कौन है? वह है एवर पावन। आत्मा पावन से पतित, फिर पावन होती है। पावन तो एक ही बाप बनाते हैं। जिसको सभी याद करते रहते हैं। यहां आबू में भी सन्यासी लोग आते हैं, तो पतित–पावन..... की धुन लगाते हैं, ताली ब(जाते), गाते रहते हैं। अभी तुम बच्चों ने अच्छी रीत समझा है। जानते हो यह रथ है। गऊ मुख भी यह है ना। यह माता है ना। भक्ति मार्ग है ही मूँझने का मार्ग, यह है (समझ) का मार्ग। बाप कहते हैं, तुम भक्ति में कितने बेसमझ बन गये हो। ज्ञान है समझ का मार्ग, ज्ञान समझ को कहा जाता है। एमऑबजेक्ट भी है मनुष्य से देवता बनने की। भगवानुवाच है ना, भगवान क्या पढ़ावेंगे? भगवान, भगवान–भगवती ही बनावेंगे; परंतु तुम अपन को भगवान–भगवती कहो यह लॉ नहीं कहता है। भगवान तो एक ही है; परंतु भगवान पढ़ाते हैं; इसलिए भारतवासियों ने नाम रख दिया है। ऊँच ते ऊँच एक भगवान ही है, जो तुमको पढ़ा रहे हैं। भगवान की तो महिमा गाते हैं, ज्ञान का सागर, सुख का सागर, शांति का सागर यह गुण इस समय तुम्हारे में भरते हैं। फिर तुम देवता बनेंगे तो देवताई गुण ही रहेंगे। यहां बाप ज्ञान का सागर है, तो तुम भी ज्ञान का सागर बनते हो। वहां तुमको ज्ञान सागर नहीं कहेंगे। यहां तुमको अच्छी रीत समझाय जाता है, बुद्धि में बैठता है। बाहर निकलने से फिर भूल जावेंगे। यहां तो बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं। वहां सेन्टर्स पर तो तुम भाई बैठ भाईयों को समझावेंगे। डायरैक्ट अभी तुम सुनते हो; इसलिए ही मधुबन की महिमा गाई हुई है। यहां तुम ईश्वरीय परिवार में बैठे हो। बाहर में तो बगुलों से मिलना, करना पड़ता है। यहां आने से तुम बाहर का सब कुछ भूल जाते हो। वहां का वायुमण्डल की(ही) अलग हो जाता है। यहां कुछ भी याद नहीं रहता। बा(प) और शान्तिधाम–सुखधाम ही याद आता है। यही पक्का कर दो, हम शांतिधाम के वासी हैं। अभी बा(प) (से) ज्ञान ले सुखधाम में जाने वाले हो। यह सिर्फ़ तुम ही जानते हो। तुम कितनी छोटी मैनॉरिटी हो। यहां जैसा वायुमण्डल कहां भी न हो सके। यहां तो डायरैक्ट बाप से सुनते हो। प्रैक्टिकल में निश्चय बुद्धि हो बैठते हो। यहां तुम आते ही हो रिफ्रेश होने लिए। बाप डायरैक्ट पढ़ा रहे हैं। यह खुशी कोई कम है ..... (शिव)बाबा हमको मनुष्य से देवता बनाने के लिए कल्प–2 पढ़ाते हैं। यह भी पक्का याद रहे तो पढ़ना चाहिए ना। भक्ति मार्ग ही अलग है, उसमें तो अनेक मन्दिर, ठिकाणे आदि हैं। कितना भटकना पड़ता है। यहां भटकने की कोई बात नहीं। बाप कहते हैं एक कौड़ी भी खर्चा न करो, फिर श्रीमत पर चलो। एक पैसा भी मत दो। मैं तो बेहद का बाप हूँ। तुमसे यह पैसा कैसे लेंगे। पढ़ाने और योग सिखलाने लिए पैसा लेंगे क्या। मैं पैसा क्या करूँगा? मुझे अपने लिए तो महल आदि बनानी नहीं हैं। हमतो पढ़ाने लिए आते हैं। शिवबाबा पढ़ाते हैं, वह तो है निराकार। वह तो वानप्रस्थ में ही रहते हैं। मकान आदि कुछ है नहीं, मकान में तुम बैठे हो पढ़(ने) लिए। फिर आवेंगे नई दुनियां में। बाप कहते हैं तुम तो हमारे बच्चे हो ना। कोई से भी मांगने की दरकार नहीं। तुम सिर्फ़ बाप से ही मांगते रहो। उनको तो फ़र्ज़ है। दलहलाल का कुआँ भरपूर है। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।